कहा है कुछ मैंने

काव्य संग्रह

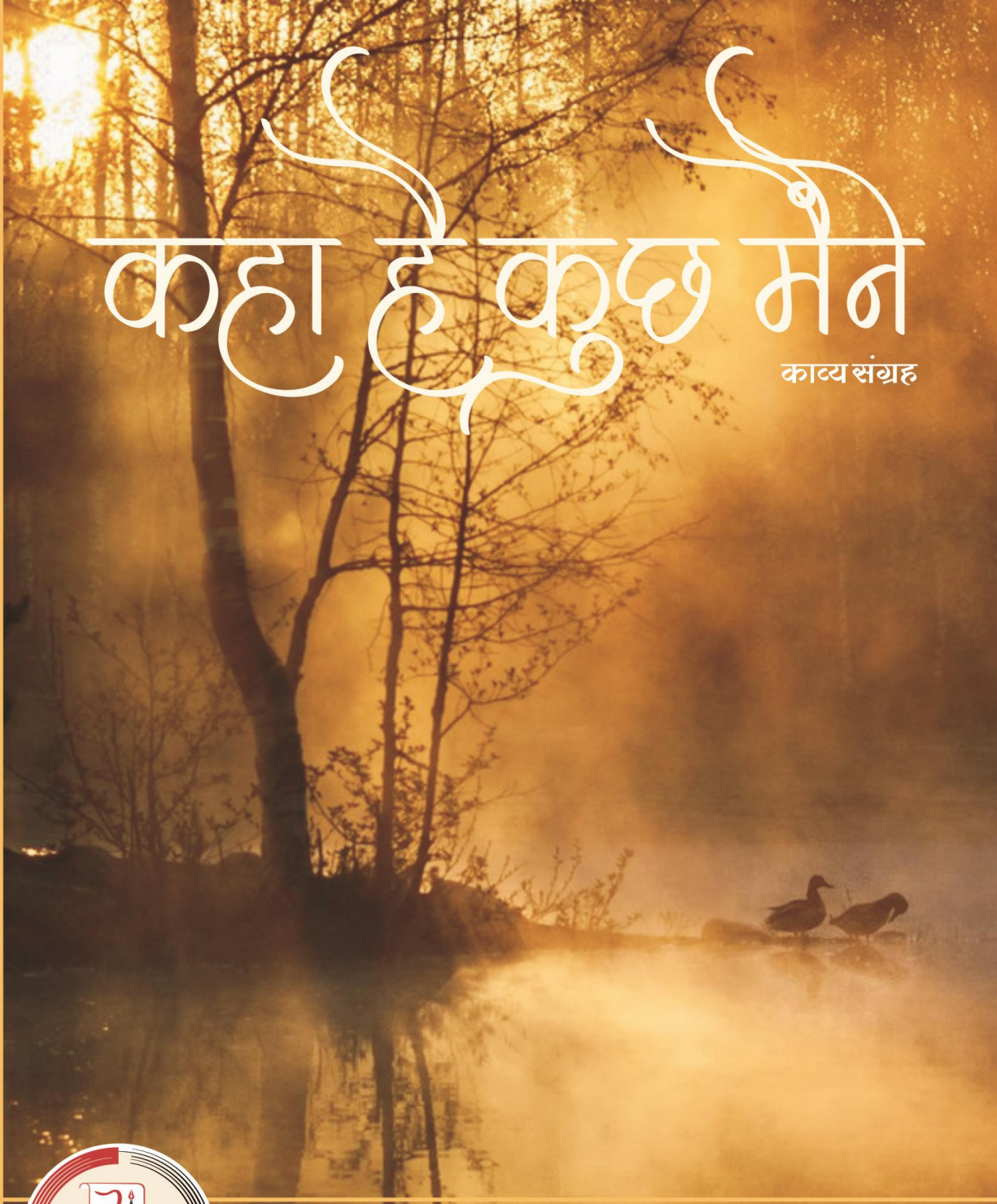

गौरी कनौजे

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

कहा है कुछ मैंने

काव्य संग्रह

गौरी कनोजे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-053-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **गौरी कनोजे**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

KAHA HAY KUCH MAINE BY GOURI KANOUJE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

नमस्ते, प्रिय पाठको,

मेरा पहला कविता संग्रह ''कहा है कुछ मैने'' आपके हाथों में है। आशा करतीहुँ, इसे पढ़ना आपको अच्छा लगेगा।

हर एकसृजन के पीछे एक कहानी होती है। इस कविता संग्रह के सृजन के पीछे भी एक कहानी है वह मैं आपको बताना चाहूँगी।

युँ तो बचपन से ही पढ़ने लिखने का बहुत शौक रहा है। पत्र - पत्रिकाओं में छोटा-मोटा कुछ लिख दिया करती थी। परंतु जैसा चाहिए वैसा प्रोत्साहन घर पर नहीं मिला। विवाह पश्चात तो लिखना लगभग समाप्त ही हो गया। परंतु एक दिन जिंदगी ने पुनः करवट ली। वैसे तो समय बुरा ही चल रहा था। परंतु निराशा के बादलों के बीच एक आशा की किरण नजर आई। उस किरण ने न सिर्फ मेरा आत्मविश्वास जगाया, अपितु प्रोत्साहन भी दिया और मेरी लेखन क्षमता को पहचान कर उसे आगे ले जाने के लिए प्रेरित किया। उसी का परिणाम है यह कविता संग्रह, जो आपके हाथों में है।

मेरे इस सफर में जो मेरे प्रेरणास्त्रोत बने वो है डॉ. संजीव चौधरी (सुप्रसिध्द अस्थिरोग तज्ञ), श्री दिनेश कनोजे देहाती (सुप्रसिध्द कवि) इनकी मैं हृदय से आभारी हूँ।

डॉ. प्रीती सुराना जी, डॉ. वसुंधराजी का भी मैं आभार मानती हूँ।

मेरे जीवन साथी श्री. नंदु कनोजे (भूवैज्ञानिक) जिनकी समय समय पर मुझे सहायता मिलती रही उनकी तथा मेरे दोनो बच्चो युगांश एवं आराध्या की भी आभारी हूँ की मैं अपने इस कार्य को पुर्ण कर पाई।

शुभकामनाऐं

'कहा है कुछ मैंने' कि बात कुछ और ही है,..

संवेदनाओं का सहज प्रवाह कविता के माध्यम से प्रस्तुत करने के प्रयास में पूर्णतः सफल हुई है गौरी कनोजे। 'कुछ कहा है मैंने' अपने लघु काव्य संग्रह से साहित्य जगत में पदार्पण कर रही उत्साही और समर्पित कवयित्री का अभिनंदन है। पारस्परिक संबंध, सामाजिक चेतना और आधुनिक शिक्षा के स्थापित ढांचे से विलग अपनी भावनाओं की स्वतंत्र अभिव्यक्ति है यह उनका प्रथम काव्य संग्रह।

'खुद को देना थोड़ा समय,

सोच वो सोचने में क्या जाता है।'

सरलता से स्वयं को देखने का आमंत्रण, वाह.. जीवन में आनंद का प्रथम चरण भी यही है।

'मिलती है एक जिंदगी जीने के लिए,

कितना कुछ है इसमें पाने के लिए'

एक परिवार का दायित्व निभाने वाली गृहणी आशाओं को समेटे गतिमान है। मेरी शुभकामनाएं और आशीर्वाद भी.. कलम, विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को निरंतर बनाए रखें, निकट भविष्य में कुछ नया सृजन बहूमुल्य अभिव्यक्ति के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाने के लिए प्रयास करते रहे, किंतु अभी स्वागत है आपका।

हार्दिक शुभकामनाएं

दिनेश 'देहाती'
अध्यक्ष – साहित्य संगम
तिरोड़ी जिला बालाघाट, मध्य प्रदेश
९८९३५७८३२२

शुभकामनाऐं

'कहा है कुछ मैंने' एक बहुत ही सराहनीय प्रयास हैं 'गौरी कनोजे' का। उनकी रचनायें 'बातें', 'कुछ लोग' जमीनी हकीकत बयान करते है, वहीं 'वो इंतजार', 'वो एक पल' प्रेमी मन के भावों को दर्शाती है। अन्य कविताओं में भी मन की सभी भावनाओं का बहुत यथार्थ चित्रण किया गया हैं। अपने इस प्रयास में बहुत सफल रही है गौरी कनोजे।

मुझे आज भी याद भी है जब वो मुझसे पहली बार मिली थी, वो मेरे हॉस्पिटल में अपने पति की सेवा-सुश्रुषा में लगी हुई थी, और खाली पलों में उनके हाथों में हमेशा किताब रहा करती थी। मैं प्रभावित हुए बिना न रह सका, मैंने उन्हें अपनी किताब 'द व्हील चेयर' पढ़ने तथा समीक्षा करने के लिए दी, उन्होंने बहुत अच्छी समीक्षा लिखी। यह साहित्य के प्रति अनुराग ही था जिसने हम दोनों में मैत्रीभाव जोड़ा। उसके पश्चात उन्होंने मेरे एक समाजसेवा से संबंधित कार्य मे भी अपनी कलम का जादू दिखाया। अपनी लेखनी का जादू यूँ ही चलाती रहो।

अनेकों शुभकामनाओं के साथ

डॉ. संजीव चौधरी

अस्थिरोग तज्ञ, नागपुर।

अनुक्रमणिका

1.	वो एक पल!	7
2.	नहीं है गलती मेरी।	8
3.	वो भी, हम भी।	9
4.	मैं क्या चाहती हूँ।	10
5.	कैसे कहूँ?	11
6.	खो गया है वो!	12
7.	ध्वस्त	12
8.	कोई बोलता ही नहीं	13
9.	जरूरत नहीं तेरी।	14
10.	जिंदगी	15
11.	कैसे जीयें हम?	16
12.	बातें!!	17
13.	सच्ची खुशी	18
14.	नहीं हूँ मैं औरों सी	19
15.	आप	20
16.	अपना खयाल रखिये	21
17.	यादें	22
18.	अधूरी मुलाकात	23
19.	नहीं बुलाया था।	24
20.	था कुछ वो!	25
21.	तो क्या हुआ!	26
22.	अब तक याद है!	27
23.	होंठो पर आने दो!	28
24.	सैनिक	29
25.	फितरत	30
26.	बेसब्र	31
27.	ऐसा वाला प्यार!	32

वो एक पल!

जाने क्या था उस एक पल में,
जब सामने वो आये
जाने क्या जादू था उनकी बातों में
हमने तो होश गवाएँ।
मुझको मुझ ही से मिलाया।
खोया विश्वास फिर से जगाया
शायद ऊपरवाला खुश है मुझसे
जो ऐसा कोई जिंदगी में आया
जाने क्या कहती है मुझसे उनकी वो नजर
नशा या कहे जादू हो गया है मुझ पर
तभी तो न सिर्फ भावनाएं जागी है,
बल्कि उतरी है यूँ कागज पर!!

नहीं है गलती मेरी।

सारी रस्में, सारी परम्पराएं निभाऊं मैं ही
ये लिखा है कहाँ?
निभाते, निभाते सारी जिम्मेदारी
अगर चूक गईं कहीं मैं, तो, नहीं है गलती मेरी
घर है तुम्हारा भी, बसाया दोनों ने है
कहते हैं दोनों पहिये बराबर हैं।
एक पहिया दौड़े हर ओर, और दूसरा मापे उसे हर ओर
इस भागमभाग में भूल गई कुछ, तो, नहीं हैं गलती मेरी।
मैं भी एक इंसान क्यों भूल जाते हो ये
बार बार क्यो गलतियां गिनाते हो
तुमसे नहीं होती गलतियां कभी
जान बूझ कर करते हो कई बार
मैं नहीं करती तुम पर यूँ आरोपों की बौछार
नहीं मानु कभी कोई बात, तो, नहीं है गलती मेरी।
प्रकृति जो करती हैं उसपे नहीं होता बस किसी का
उसमे भी गलती ढूंढे तुम जैसा महान तो बस एक ही होता है।
कर देखो कभी तुम भी वो सब, जो मैं करती हूँ
हर एक धुरी पर कदमताल मिलाकर देखो
जान जाओगे हालत मेरी, कितने समझौते मैं करती हूँ।
चलते चलते कभी गिर जाऊँ, तो, नहीं हैं गलती मेरी।

वो भी, हम भी।

नहीं बदले वो भी, नहीं बदलेंगे हम भी
वो बाज नहीं आते अपनी बेरुखी से,
हम बाज नहीं आते अपनी चाहत से।
भले बने हो पत्थर से, हमने तो चाहा है शिद्दत से।
नहीं बदले वो भी, नहीं बदलेंगे हम भी।
न थी हिम्मत उनमे, साथ चले दो कदम
हमें क्या, हम तो महसूस करते हैं साथ उनका हर दम
हम चाहें चाँद को, वो भी हमें चाहे ये जरूरी तो नहीं
रौशनी बिखेरता रहता हैं वो हम पर,देखा हैं खुली आँखो से
नहीं बदले वो भी, नहीं बदलेंगे हम भी।
जब वो नहीं बदलते खुद को, तो हम क्यों बदले?
लगे रहो आप भी, लगे रहेंगे हम भी
आप दे बेरुखी, हम दे अपनापन
चलता रहेगा ये लेन-देन दिल का दिल से।
नहीं बदले वो भी, नहीं बदलेंगे हम भी

मैं क्या चाहती हूँ।

मैं क्या चाहती हूँ? मैं क्या माँगती हूँ?
मैं क्या सोचती हूँ? मैं क्या खोजती हूँ?
ये न समझ पाया कोई अब तक,
या समझने की कोशिश नहीं की,
या समझकर भी अनजान बने रहे,
या समझाना नहीं आया मुझे,
ये मैं न समझ पाती हूँ।
जो मुझसे मिलके पहली बार
मुझ पर फिदा हो गए, उन्हें मैं परखती हूँ।
जिन्होंने कहीं गहरे दिल को छुआ
उन्हें अपने करीब पाती हूँ।
पर अब तक वो न मिला
जिसे, मुझसे ज्यादा मैं भाती हूँ
शायद ऐसा कोई बना ही नहीं कायनात में
यही सोच खामोश रह जाती हूँ।
पर तलाश जारी रहेगी ताउम्र
क्या पता वो कहीं दूर क्षितीज के
उस पार मिले, ये मैं खुद को समझाती हूँ।

कैसे कहूँ?

कैसे कहूँ की नहीं इंतजार था
हर एक पल में मन तड़पा बार बार था
न जाने कितनी बार देखा शायद कोई संदेश आये
दिल मे भी एक अलग सा गुबार था
कैसे कहूँ की नहीं इंतजार था।।
याद आ रही थी वो सारी बातें
जो कही थी कभी, क्या वो सारी बातें, सारे वादे सच थे
या फिर वो सिर्फ एक खुमार था?
कोई किसी को यूँ सपने न दिखाए
दिखाए तो फिर यूँ न तड़पाये
वादे न निभाये और मुकर जाए
कहीं कुछ टूट सा रहा है, जो कभी ऐतबार था
कैसे कहूँ की नहीं इंतजार था।।
बड़ा पागल है ये मन, जो करता है इंतजार
लाख समझाया जरूरत नहीं ऐसे बेदर्दो की हमें
हर खुशी से जिंदगी गुलजार है
किसी से कोई खुशी की उम्मीद न रख
उम्मीदें तो यूँ तोड़ा करते है लोग
मानो उम्मीदें तोड़ना उनका पसंदीदा काम था
कैसे कहूँ की नहीं इंतजार था।।
कहीं उन्हें ये डर तो नहीं, हमारी खुशियाँ न बिखर जाएं
हम खुशियाँ चुराया करते हैं, बिखरने नहीं देते
कोई उन्हें बताये ये काम हमारा बार बार था
कैसे कहूँ की नहीं इंतजार था।।

खो गया है वो!

यूँ तो कई एहसास है खास
पर जिस एहसास से धड़कता है दिल
जाने कहाँ खो गया है वो
यूँ तो कई दोस्त है इस बस्ती में
पर जिसने नई उम्मीदें दी जिन्दगी में
जाने कहाँ खो गया है वो!!!
आवाज देकर थक रहे है हम
हर आवाज, हर चेहरे में उसे ढूंढ रहे हैं हम
जाने कहाँ खो गया है वो।
जाने कहाँ खो गया है वो!!!!!

ध्वस्त

यूँ तो बहुत व्यस्त हैं आज, पर मन उध्वस्त हैं आज।
बहुत कुछ देखा नहीं जाता, सहा नहीं जाता
लेकिन होंठो से कुछ कहा भी नहीं जाता।
कदाचित इसलिए मन बहुत संतप्त हैं आज।
बेगानों के वार तो कोई सह भी ले,
अपनों के आघात कोई कैसे सहे,
यही सोच
मन निस्तब्ध हैं आज...!

कोई बोलता ही नहीं

क्या मसरूफियत इतनी बढ़ गई
आवाज दे रही हूँ कबसे
कोई बोलता ही नहीं।
गर आदेश हैं ये आपका
तो चलो ऐसा ही सही।
लड़ने का हक तो है मुझे
पर चाहत नहीं।
मंजिल तो पता है मुझे
पर रास्ता खो गया है कहीं।
इतनी मसरूफियत भी किस काम की
जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं।
ऐसा न हो कभी, जब आप पुकारें
और हमारा वजूद ही न हो कहीं।

जरूरत नहीं तेरी।

तुझे चाहने के लिए जरूरी नहीं तेरा होना मेरे पास
जर्रे जर्रे में होता है तेरी मौजूदगी का एहसास
तू खयालो में है हर पल, यादों में भी हैं
हर चेहरे में नजर आता हैं तू ही
दुआओं में भी तू, शिकायतों में भी तू
तू खुदा तो नहीं फिर हर ओर कैसे है तू?
बिना तुझे सोचे कुछ लिखना नहीं मुमकिन,
बारिश की बूंदों में बरसता सा लगता हैं तू
हवाओं के साथ आकर मुझे गले लगाता हैं तू
आईने में खुद को निहारु तो पीछे से मुस्कराता है तू
अब छोड़ दिया इंतजार करना, क्योंकि अब तो हर पल
साथ रहता हैं तू, साथ रहता हैं तू।

जिंदगी

हर पल सुहानी है जिन्दगी,

किसी एक पल ने दी खुशियां, दूसरे पल में रोये भी।

पर इन्हीं खट्टे मीठे पलों से, गुलजार है जिंदगी।।

क्यों ये सोचें हम कि, बुरा ही होता है हमारे साथ

सोच कर देखो गौर से, कुछ तो अच्छा छिपा था उसके पीछे,

सकारात्मकता अपनाना ही तो है जिन्दगी

कभी चाहे अनचाहे कुछ लोग मिल जाते है,

जो दिलों पर अच्छे बुरे निशां छोड़ जाते है,

उन निशानियों को संभालकर आगे बढ़ना है जिंदगी।।

हर पल सुहानी है जिन्दगी।।

कैसे जीयें हम?

मिलती है एक जिंदगी जीने के लिए,

कितना कुछ है इसमे पाने के लिए,

जो खो दिया उसका हिसाब न रखो,

जो पा लिया उसे पल पल याद करो,

साँसे तो हर कोई लेता हैं,

इतना काफी नहीं जीने के लिए,

कितनो को जीना सिखाया आपने,

कितनो के दिलो में जगह बनाई,

तरीका हैं ये जीने का इसका निबाह करो।

कौन हिसाब रखेगा कौन कितना जिये,

जितना भी जीये जी भर कर जीये!!!!

बातें!!

जाने करनी होती है कितनी ही बातें,
पर रह जाती है अधूरी ही बातें,
कुछ बातों के लिए वक्त नहीं देता इजाजत
कुछ के लिए दिल, सारी बातें दिल मे लिए,
जागते हैं फिर कई रातें।
जाने करनी होती हैं कितनी बातें।।
खट्टी भी होती हैं बातें, मीठी भी
कोई खुशी का पयाम लाती है,
कोई लाती है गम का खजाना भी,
हँसाती है कभी बातें, रुलाती भी,
कभी बन जाते है इन्हीं बातों से
बड़े ही खूबसूरत से नातें।।
जाने करनी होती है कितनी ही बातें।।
कभी हिचकिचाहट होती है कहने में
कभी बस यूँ ही कह जाते हैं
कहते कहते रुकना या रूकते रुकते कहना
कभी चला जाता है वक्त सोचते सोचते,
जाने करनी होती है कितनी ही बातें।।
जिंदगी का नहीं कोई ठिकाना, कब आ जाये किसका परवाना
कर लो अभी सारी बातें, जाने करनी होती है कितनी ही बातें।।

सच्ची खुशी

वो मिलना भी क्या मिलना था!
जो सच्ची खुशी दे गया।
थोड़ी सी बातें, थोड़ी सी हँसी, जरा सी दिल की बातें
और मिलने का मजा आ गया।
'जल्दी आ जाओ' जैसे ही ये संदेशा आया,
मन थोड़ा से ठिठका, थोड़ा सा घबराया
कैसे जाऊँ मिलने, ये समझ न आया।
पर फिर जैसे पैरों को और वक्त को पंख लग गए
मैं भी भागी, वो भी भागा।
हमें देख उनका मुस्कराकर बुलाना
दिल को भा गया।
न हाथो में हाथ था,
न कोई संगीत न कोई साज था
नजर से नजर की मुलाकातें हुई,
दिल से दिल की बातें हुईं।
''मैं तुम्हारा हूँ'' ये कहना ही सब कुछ कह गया।
वो मिलना भी क्या मिलना था,
जो सच्ची खुशी दे गया!!

नहीं हूँ मैं औरों सी

नहीं हूँ मैं औरों सी तो क्या गम है?
समेट ली है जिन्दगी में खुशियां तमाम
ये क्या कम है ।
नहीं करनी बातें, चुगलखोरी
नहीं बनानी हैं अपनों से दूरी
दूसरों की खुशियों में खुश हैं तो
पराये गम में आँखें अपनी भी नम हैं।
कर्तव्यों की धुरी पर चलते चलते
कुछ वक्त किताबों को भी देना है
अपने कुछ एहसास पन्नों पर भी उतारना हैं
फिर किसने देखा उजाला है या तम हैं।
नहीं समझ पाती दुनिया मुझे
तो क्यों आँसु बहाऊ मैं
एक खुशियों की दुनिया खुद बसाई है मैंने
जहाँ हँसी ज्यादा आँसु कम हैं।
जो नहीं याद करते मुझे
उन्हें याद अपनी दिला देती हूँ
क्योंकि पता हैं हमें, उन्होंने भी
दिल मे हमें कहीं गहरे जगह दी हैं
वो भी कुछ हैं तो हम भी हम हैं।
नहीं हुं मैं औरों सी तो क्या गम हैं।

आप

आप दोस्त है, प्रेरणा है, मुस्कराने की वजह है।
जिसका रहता हैं हर पल इंतजार वो आप हैं।

जिससे करता हैं हर पल बात करने का मन वो आप हैं।
पर सामने जिसके जुबां हो जाती हैं बंद वो आप हैं।

जिसकी ओर भागे मन वो आप हैं।
मन ही मन बातें करती हूँ जिससे,

महसूस करती हूँ जिसका, स्नेह हर पल वो आप हैं।
न रहा जाए जब, लिख देती हूँ कुछ, जिसके लिए वो आप है

जिसके पढ़ लेने की उम्मीद पर, लिखा जाता हैं कुछ वो आप हैं।
जिसके पढ़ लिए जाने पर, खुशी से उछलता है दिल वो आप हैं।

अपना खयाल रखिये

अपना खयाल रखिये,
इसलिए नहीं कि ये आपके लिए अच्छा हैं
बल्कि इसलिये
क्योंकि आपको देखकर कोई जीता है!

हमेशा खुश रहिये,
इसलिए नहीं कि ये सेहत के लिए अच्छा है
बल्कि इसलिए
कि आपको खुश देखकर किसी का चेहरा खिल उठता है।

अपने लिए वक्त निकालिये,
इसलिए नहीं कि ये जरूरी है
बल्कि इसीलिए
कि कोई उस एक वक्त के लिए महीनों इंतजार करता हैं।

अपनी खूबियों पर नाज कीजिये
इसलिए नहीं कि आप सबसे अलग है
बल्कि इसीलिए
कि आपकी इन्हीं खूबियों पर कोई फिदा है।

यादें

कहाँ से चली आती है जाने ये यादें,
हर मीठे पल की तस्वीर ले आती है यादें,
न बुलाओ तो भी चली आती है,
आकर और भी तड़पा जाती हैं यादें,
चले गए लोग अपनी राहों में हमें अकेला छोड़कर,
हम तो खड़े हैं अब भी वहीं आंसुओं की माला पिरोकर।
काश हो पाता यूँ भी वो भी तड़पते यूँ ही,
पर नहीं ऊपरवाला ये तड़प उन्हें न दे
हमारी तो अमानत है वो प्यारी यादें।
दिल को रहता है हर पल इन्तजार,
कानों में फिर वही गीत वो गा दे,
कहते है वो उन्होंने सब कुछ किया हमारे लिए
हम भी तो दुनिया से दूर हो चले है तुम्हारे लिए
ठान लिया था हमने, न करेंगें तंग उन्हें
पर क्या करें फिर आ गई करने हैरान हमे ये यादें
कहाँ से चली आती हैं जाने ये यादें
हर मीठे पल की तस्वीर ले आती हैं यादें!!!

अधूरी मुलाकात

बेशक मिले हम उनसे पर मुलाकात रही अधूरी
चाहत जो दिल मे थी वो न हो पाई पूरी
जी भर कर देखा उन्हें पर नजरों की मुलाकात जी भर न हो पाई
बातें भी हुई पर मन की बात कहाँ हो पाई
वो हैं उस मुकाम पर जहाँ पहुँचना नहीं मुमकिन
कहाँ जमीं की मिट्टी ने चाँद से प्रीत लगाई
चाँद तो चमकता रहता हैं, हम ताकते राह जाते है
उनके दीदार से जो सूकून हासिल होता है
हम तो उसी से खुश हो जाते है
उनकी बातें भी तो हमें सूकून दे जाती है
सुखी जमीन पर बारिश की बूंदों सी बरस जाती है
वो हैं हमारे, ये ख्याल भी खुशनुमा एहसास दे जाता है।
बेशक न दे सकें वक्त हमें पर जो दिया है
वो तो अनमोल है।
पास न सही, साथ तो हैं ये कुछ कम तो नहीं
पर इस दिल का क्या करें जो मानता नहीं
चाहत में आपकी धड़कता ही जाता हैं
मुलाकात बेशक रही अधूरी, कहानी हो जाये पूरी, कहानी हो जाये पूरी ....

नहीं बुलाया था

नहीं बुलाया था उन्हें हमने
जो पता होता इस बेरुखी का
तो वो बढ़ा हाथ भी न थामा होता हमने
उम्मीद का दिया जलाये बैठे है
अपनी नींदों को गवाएँ बैठे हैं
कभी तो आएगी कोई खबर उस ओर से
यह सोच रतजगा कर बैठे हैं
क्यों बढ़ाया था दोस्ती का हाथ
जब दिखानी थी यूँ बेरुखी
आज तो पूछेंगे ही ये मन में ठान बैठे हैं
जगाकर हमारे एहसास
जाने कहाँ खोये बैठे है
क्या पता था ऐसे भी होते है
पत्थर के बूत दुनिया में
हम तो उन्हें खुदा समझ बैठे हैं।

था कुछ वो!

जादू था किसीका, या नशा था
था कुछ जरूर, जो भी था

उन रातों ने जगाया था हमें
जो अब हैरान करती है।

माना बदलता है हर कोई
पर वजह भी तो बताये कोई।

हमने तो समझा था उन्हें नाखुदा
पर जाने वो क्या था

था कुछ जरूर, जो भी था।

तो क्या हुआ!

कानों में हैं आज भी वो सारी बातें जो मुझसे कही थी,
तो क्या हुआ, जो आज मुझसे कुछ भी नहीं कहते।

पढ़ती रहती हूँ सारे पुराने संदेश और खुश होती रहती हूँ,
तो क्या हुआ, जो आज मुझे वो कुछ भी नहीं लिखते।

होंगे कितने मजबूर वो, जो चाह कर भी मिल नहीं पाते
हमारी तो अनमोल धरोहर हैं वो शामें और वो रातें।

जिंदगी को एक नया अंदाज दिया हैं जीने का
दिया है एक कारण हमें सदा खुश रहने का

आप रहेंगे सदा दिल में, भले जिंदगी छीन ले
हक हमसे जीने का।

अब तक याद है!

आपका नजरों से पी जाना अब तक याद है,
लगाया तो गले था, पर रूह को छू जाना, अब तक याद है।
बिना कुछ पूछे, बिना कुछ कहे शरारत कर जाना,
अब तक याद है।
रिसते जख्मों पर हाथ रख दिया,
तन्हा राही को मंजिल का पता और साथ दे दिया।।
हमारी चाहत को मील का पत्थर बना दिया।
आप यूँ ही रहे जिन्दगी में शामिल मुस्कान बन के,
अब तो यही ख्वाहिश, आपसे मिलने के बाद है।
तू हर पल है साथ मेरे, पास न होकर भी पास है मेरे,
आपका ये कहना ही तो मुस्कान-ए-राज हैं।
आपके एक इशारे ने जिन्दगी में जाने कितने रंग भर दिए
उन रंगों से मेरा हर पल, हर दिन आबाद है।
मुमकिन होता गर बताना तो बता देते,
जिन्दगी आपसे मिलके हर खुशी की हकदार है!

होंठो पर आने दो!

हैं बड़े खास, जो एहसास

उन्हें होंठो पर आने दो ।

वो पल था थोड़ा भावुक सा

था कुछ छिपा उसमे नाजुक सा

पर नहीं बिखरेंगे कहने से ये, लबो पर इसको आने दो।।

क्या पता आपके कहने से,

जीवन मे किसी के नए रंग भर जाए

नई उम्मीदें जो दी हैं आपने, उन्हें नए पंख लगाकर उड़ने दो।।

हालात वो कुछ ऐसे थे,

हम थे थोड़े टूटे से, नहीं बताना आसान,

उस पल मिली वो सौगात, जिसकी जरूरत थी सबसे खास

जो बन गई अविस्मरणीय एहसास

क्या उधर भी थे यही एहसास, जानने को आतुर है मन आज

उन एहसासों को अपने तक न रहने दो

है बड़े खास जो एहसास, उन्हें होंठो पर आने दो।।।

सैनिक

मन का कोई कोना आज खाली खाली है

जाने किस बाग से आज बिछड़ा उसका माली हैं

खुद का स्वार्थ परे रख कर,

वो निकला था भारत माँ की सेवा पर,

आज उसने भारत माँ के चरणों मे

अपनी जगह बना ली हैं।

संगी साथी, माता, पिता, बीवी, बच्चे चित्कार करें

उन्हें क्या पता वो गया है उस जगह

जहाँ देवगण उनका सत्कार करें।

जन जन के हृदय में आज उसने जगह पा ली है।

कल होगा नया सवेरा भले रात आज काली-काली हैं।।

१४.२.२०१६ के शहीदों को समर्पित

फितरत

दिल की जमीन आज खामोश, सुनसान क्यों हैं?
दिल इतना परेशां, हैरान क्यों हैं?
क्या कर ले यकीन की वो कोई नहीं था अपना
जो कुछ हुआ, वो था शायद एक बुरा सपना
मतलबपरस्त इस दुनिया मे हर कोई उठाता है फायदा
कभी दोस्त बनकर, कभी भगवान बनकर
चलो ये भी सही, कोई जाते जाते दे गया बहुत कुछ
अच्छा न सही बुरा बनकर।
हम तो फिर भी खुश है, फितरत है अपनी
सबक जो भी मिले, अच्छा या बुरा
जिंदगी नहीं है थमनी, नहीं है रुकनी।

बेसब्र

ऐसी एक बात वो हमसे कह गए
हमें हमी से रुसवा कर गए
जब से मिले हैं हम उनसे
हम अपने मे कम वो हममें ज्यादा रह गए।
हमें तो बेसब्र कह दिया यूँ ही
हमारे सब्र का इम्तिहान लेना बंद होगा कभी?
ना मैं यशोधरा, ना मैं उर्मिला
फिर भी करती हूँ न खत्म होने वाला इंतजार
क्या मिलेगा कभी इसका सिला ।
ज्यादा तो नहीं माँगते हम?
सिवा चंद पलों और चंद बातों के
वो भी नहीं देते वो हमें, और ये महसूस कराते हैं,
मानो हम ज्यादा माँग गए।
हममें हमारी कमी गिना गए।

ऐसा वाला प्यार!

हमने तो देखा है फिल्मों वाला प्यार
जहाँ होती है, मीठी तकरार
कहीं कोई लाचार, कहीं कोई बेकरार
हमने तो सुना है, किस्से कहानियों वाला प्यार
जहाँ प्रेमी मर मिटे लेकर नाम-ए-प्यार
हमने तो सुना है, जरूरतों वाला प्यार
जहाँ जरूरतें पूरी करने लोग करते है व्यापार
हमें तो मिला है, जिम्मेदारियों वाला प्यार
सबका ध्यान रखना है हमारा काम
जाने खुद की खुशी कहाँ खो गई
दूसरों की खुशी का ध्यान रखने में
हो जाती हैं सुबह से शाम।
कहीं धीमे से महसूस किया हमने भी
एक प्यारा सा एहसास,
बिना मिले, बिना बोले कोई कैसे बन जाता है खास
महसूस किया उन्हें हर पल आस पास
कानों में गूँजता है हर पल वो इजहार
दिमाग ने समझाया, दिल को समझ न आया
कहने लगा छोड़ दो सारी बातें,
हमें तो कर देखना है एक बार
ऐसा वाला प्यार
हमें तो कर देखना हैं ऐसा वाला प्यार।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - गौरी कनोजे

जन्म - ५ मार्च

शिक्षा - एम.ए.(हिंदी साहित्य), बी.एड.

व्यवसाय - अध्यापिका

पता - १०२/ए, अथर्व नगरी ४, पिपला फाटा, हुडकेश्वर रोड, नागपुर,४४००३४. महाराष्ट्र।

फोन नं.- ९९२३२१११८३

ई मेल - gauri.kanoje@gmail.com

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-053-7

मूल्य 60/-

शब्द सुगंध